Dr. Ranjeet Kumar
Deptt. of History
H. D. Jain College, Ara.

B.A-PART-III
paper- 5

* विजयनगर साम्राज्य के राजनैतिक इतिहास :—

विजयनगर की स्थापना 1336 ई० में संगम वंश के हरिहर एवं बुक्का के द्वारा हुई थी। जो पहले वारंगल के काकतीय शासक प्रताप रुद्र-II की सेवा में थे। लेकिन 1323 में काकतीय राज्य पर मुसलमानों का अधिकार स्थापित हो जाने के बाद वे आधुनिक कर्नाटक के काम्पिली राज्य में चले गए तथा वहां मंत्री बन गए। मुस्लिम विद्रोहियों को शरण देने के कारण जब मुहम्द तुगलक की सेना ने काम्पिली पर आक्रमण किया तो दोनों भाईयों को कैद कर लिया गया। उन्हें मुसलमान बना दिया गया तथा काम्पिली के विद्रोह से निपटने के लिए नियुक्त कर दिया गया।

सुल्तान के लिए काम्पिली पर अधिकार करने के बाद दोनों संगम भाई संत विद्यारण्य की पहल पर पुनः हिन्दू बन गए और अपनी स्वतंत्रता घोषित की तथा तुंगभद्रा नदी के दक्षिणी किनारे पर एक नए शहर की स्थापना की जो विजयनगर अथवा विद्यानगर कहलाया।

* <u>विजयनगर साम्राज्य साहित्यिक स्रोत</u> :- विदेशियों का विवरण जैसे एक अफ्रीकी यात्री जो मोरक्को के निवासी था इब्नबतूता ने हरिहर प्रथम के विजयनगर साम्राज्य का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है। इटली (वेनिस) के यात्री निकोलो-डि-कोंटी ने विजयनगर साम्राज्य का भ्रमण देवराय-I के काल में किया था। फारसी यात्री अब्दुर रज्जाक ने देवराय-II के अधीन साम्राज्य का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है। कृष्ण देव राय के काल में आने वाला डोमिंगो पायस पुर्तगाली यात्री था। ड्यूरेट एडवार्डो बारबोसा भी एक पुर्तगाली यात्री था जो कृष्णदेव राय के काल में विजयनगर साम्राज्य में आया था। एक अन्य पुर्तगाली यात्री फर्नाओ-नूनिज अच्युत देवराय के काल में आया था।

देशी ग्रंथ —

कृष्णदेव राय के आमुक्तमाल्यद से हमें विजयनगर के शासकों के राजनैतिक विचारों तथा राजनीति का पता चलता है। अल्लासनी पेद्दन्न के मनुचरितम् से हमें विजयनगर साम्राज्य की सामाजिक स्थिति विशेषकर जाति प्रथा की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। कुमार कम्पन (बुक्का प्रथम का एक पुत्र) की पत्नी गंग देवी के मदुरा विजयम में बुक्का प्रथम के शासनकाल में कम्पन द्वारा मदुरै पर अधिकार किए जाने का विवरण है।

एक समकालीन नाटक गंगाधर का गंगदास प्रताप विलासम में देवराय-II की मृत्यु के बाद विजयनगर शहर पर बहमनी तथा उड़ीसा के गजपति शासकों द्वारा घेरा डाले जाने का विवरण है।

<u>पुरातात्विक स्रोत</u> :- <u>अभिलेख</u> :- हरिहर-I के बागपेल्ली ताम्रपत्र अभिलेख में उसकी उपलब्धियों का वर्णन मिलता है। संगम-II (कम्पन का पुत्र) के बित्रागुंटा

→

→ अभिलेख में विजयनगर साम्राज्य की स्थापना के जिम्मेदार 5 संगम बंधुओं की वंशावली मिलती है। हरिहर-II के चन्नराय पट्टीना अभिलेख से ज्ञात होता है कि बुक्का-I कई क्षेत्रों को जीतने में सफल रहा था। देवराय-II के श्रीरंगम ताम्रपत्र में उसकी अनेक उपलब्धियों का उल्लेख मिलता है।

सिक्के :-

विजयनगर के शासकों ने "वाराह" नाम के सिक्के काफी बड़ी संख्या में जारी किए। इन सिक्कों के अगले हिस्से में कई हिन्दु-देवी-देवताओं तथा हाथी एवं सांड जैसे जानवरों की आकृतियां है। इनमें गंडबेरुंड (एक दो मुहीं चील जिसकी प्रत्येक चोंच तथा पंजों में एक हाथी फँसा हुआ है) की आकृति भी है। इन सिक्कों के निचले हिस्से में नागरी अथवा कन्नड़ लिपि में राजाओं के नाम है। देवराय-II के कुछ चतुर्भांश वाराहों में उसे 'गजबेंतकर' बताया गया है।